प्रीति सैन एवं रूचि गोस्वामी

सारांश

''कला ही जीवन और जीवन ही कला है''

मनुष्य का जीवन कला पर निर्भर है। कला के बिना मनुष्य अधूरा है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि जीने का सही ढंग ही कला है। चित्रकला कला का एक प्रकार है। चित्र एक संयोजन है। संयोजन में न केवल दिखाई देने वाले रूप और रंगों का प्रयोग होता है बल्कि कलाकार अपनी रचनात्मक प्रवृत्तियों को भी लोगों के सामने प्रदर्शित करता है। संयोजन विधि के द्वारा ही चित्रों को अलग-अलग शैली और काल के नाम से जाना जाता है। संयोजन एक वस्तु का नाम नहीं है। इसमें रेखा, रूप, वर्ण, ताल, पोत एवं अंतराल होते हैं। इनमें से कोई भी अंश नहीं होगा तो वह चित्रकला नहीं हो सकती। किसी भी चित्र में इन छः तत्त्वों के सही संयोजन से ही एक सफल चित्र बनाया जा सकता है। अत: कला का हमारे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रस्तुत शोध पत्र जाने-माने चित्रकार विनय शर्मा की कला एवं कला यात्रा को विस्तृत रूप से चित्रित करता है। इस शोध पत्र में विनय शर्मा की कला के विभिन्न आयामों को प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत के माध्यम से दर्शाया गया है। विनय शर्मा राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त चित्रकार है, जिन्होंने चित्रकला के विभिन्न आयामों को बारीकी से प्रस्तुत किया है। विनय शर्मा एक अच्छे चित्रकार होने के साथ-साथ देश-दुनिया में ''पेपरमैन'' के नाम से भी जाने जाते है। प्रस्तुत शोध पत्र इनकी पेपरमैन कला विधा को विस्तार से उल्लेखित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ों का आंकलन और आंकड़ों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत के आधार पर किया गया है। जहां प्राथमिक स्रोत में विनय शर्मा के साक्षात्कार को विश्लेषित किया गया है, वहीं द्वितीयक स्रोत में पुस्तकों, शोध प्रबंध और इंटरनेट द्वारा एकत्रित सामग्री के आधार पर गहन विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र विनय शर्मा के व्यक्तित्व एवं उनकी कला यात्रा को विस्तारपूर्वक उजागर करता है।

संकेताक्षर :- अंतराल; चित्रकला; छयांकन; छापाकार; पेपरमैन; रेखांकन; रूपाकार; रंगपटन; लोक-चित्रण; संयोजन; संस्थापन; स्रोत.

चित्रकला के विभिन्न आयाम हैं। यह एक ऐसी विधा है, जो जनमानस के अंतर्मन को उद्धवेलित करती है। चित्रकला के विविध आयाम विभिन्न विधाओं में प्रतिबिंबित होते हैं। इसी क्रम में भारत के विख्यात चित्रकार विनय शर्मा की चित्रकला विभिन्न विधाओं का सम्मिश्रण है, जिनकी चित्रकला यात्रा को इस पत्र के माध्यम से विश्लेषित किया गया है।

प्रस्तुत शोध में चित्रकारी विधा के नवीन प्रयोगों पर विस्तार से चर्चा की गई है। समकालीन चित्रकारी के नवीन प्रयोग, सुदृढ़ समाज की अभिव्यक्ति, समसामयिक घटनाओं का विश्लेषण एवं ''पेपरमैन'' के रूप में पहचान बनाना विनय शर्मा को अन्य कलाविदों से पृथक करता है।

प्रस्तुत शोध में इस तथ्य को समझाने का प्रयास किया गया है कि चित्रकला की विभिन्न विधाएँ स्वयं में परिपूर्ण है। जहाँ विनय शर्मा ने चित्रकला को नई परिभाषा दी, वहीं ''पेपरमैन'' के रूप में उन्होंने इस विधा को राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर तक ले जाने का सफल प्रयास भी किया है।

विनय शर्मा एक चित्रकार के साथ-साथ छापाकार एवं संस्थापन कला की अपनी विशिष्ट शैली के कारण समक. ालीन कला परिदृष्य में विशेष स्थान रखाते हैं। विनय शर्मा एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं और अपनी विशिष्टता एवं सौम्यता के कारण पहचाने जाते हैं। विनय शर्मा अपने चित्रों, छापों और रेखांकन के कारण कला जगत में अपनी अलग पहचान रखाते हैं। विनय शर्मा सृजन में अपनी चेतना का विनियोजन करते हैं। चेतना विभिन्न संस्कारों एवं अनुभवों का संचय होती है और रचना के समय इन अनुभवों या संस्कारों की विशिष्ट भूमिका बन जाती है। विनय शर्मा के चित्रों में भारतीय आदर्शों की उच्चता, अनुभूतियों की सत्यता और प्रखारता रहती है। सृजन के समय विनय शर्मा कलाकृति में मग्न होकर माध्यम एवं बंधनों से मुक्त होकर अपनी मानसिक वृत्तियों में प्रवाह को संतुलित, स्वच्छन्द, उल्लासमय कला सृजन को अंतिम लक्ष्य तक एकाग्र एवं शांतचित्त भाव से अपनी अभिव्यक्ति को विस्तार देते हैं।

विनय शर्मा की आरंभिक शिक्षा लालसोट, राजस्थान में पंडितजी के यहाँ हुई, जहाँ विनय लकड़ी की तख्ती पर स्याही की दवात से घिसकर उस पर चमक तैयार करते थे। उसके बाद लकड़ी की कलम बनाकर खाड़िया से लेख लिखाते थे। यहीं से इनकी आरंभिक कला यात्रा की शुरूआत हुई। 1

विनय शर्मा ने लालसोट में ऐसी पुरातात्विक हवेली में शिक्षा ग्रहण की, जो पूरी तरह से भित्ति चित्रों से ओ. त-प्रोत थी। सन् 1972 में विनय शर्मा जयपुर आ गए। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद विनय शर्मा ने 1986 में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर से चित्रकला विषय में डिप्लोमा किया। 1989-90 में उच्च शिक्षा के लिए जोन्समूर विश्वविद्यालय, इंग्लैंड गए। जहाँ उन्होंने स्थानीय त्योहारों पर एक पूरी श्रृंखला तैयार की, साथ ही प्रकृति-दृश्यों को भी अपने चित्रों में उकेरा। इसके बाद 1990 में ''फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट'' एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा से ग्राफिक्स में पोस्ट डिप्लोमा किया। इस विश्वविद्यालय में उन्होंने छाया कला की एचिंग, लीनो, वुड्कट एवं लीथो पद्धतियों के अलावा सेरीग्राफी का भी गहन अध्ययन किया।

इस शोध पत्र में विनय शर्मा के कार्यों का विस्तार से अध्ययन किया गया है। शोध में बताया गया है कि किस तरह विनय शर्मा ने अपने चित्रों, ग्राफिक्स, इंस्टालेशन एवं रेखांकनों के माध्यम से राष्ट्रीय ही नहीं अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विनय शर्मा की कई प्रदर्शनियों में भागीदारी रही, तो कई कला शिविरों में हिस्सा ले भारतीय संस्कृति-सभ्यता का रंगात्मक एवं चित्रात्मक प्रदर्शन कर कलाप्रेमियों से प्रशंसा भी बटोरी। इनके चित्र भारत ही नहीं अन्य देशों की जानी-मानी कला दीर्घाओं में संग्रहीत है। विनय शर्मा कई बड़े सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं।

विनय ने ''पेपरमैन'' के रूप में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। वे राजस्थान, दिल्ली, पंजाब उत्तर प्रदेश, बिहार, मुम्बई, मसूरी, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, चेन्नई और तमिलनाडू के विभिन्न शहरों में अपनी इस अनोखी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं, जबकि सिंगापुर, मलेशिया, दुबई, कतर, जर्मनी, जापान, कनाडा, अमेरिका, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, पौलेंड, इजिप्ट आदि देशों में कला से परिपूर्ण इस अनोखे परिधान को पहनकर विनय शर्मा ने कलाप्रेमियों को न केवल भारतीय संस्कृति-सभ्यता के दर्शन कराए, बल्कि देश की कला का प्रचार-प्रसार भी किया। विनय शर्मा का ''पेपरमैन'' रूप तकनीकी और विचारों से युक्त है। विनय शर्मा के अनुसार भविष्य में ''पेपरमैन'' एक संगीतकार और बच्चों के रूप में नजर आएगा, तो उसे रेड्यिो सुनते भी देखा जा सकेगा।

डॉ. सुनील कुमार, (2000) ने ''भारतीय छापा चित्र कला'' पुस्तक में अंतराष्ट्रीय और भारतीय छापा कला के इतिहास एवं छापा कला के विभिन्न माध्यमों पर विस्तार से चर्चा की है। पुस्तक में छापा कला के विभिन्न माध्यम, सामग्री, विधि आदि पर लेख हैं, जो कलाकारी एवं छापा कला में रूचि रखाने वाले कला छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है। डॉ. राजेश कुमार व्यास, (2013) ने ''रंग नाद'' पुस्तक में संगीत, नृत्य, चित्रकला एवं छायांकन पर आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने अनाहत में स्वर, लय, ताल, सुर, चिंतन, रंगपटन में नटराज, नृत्य आदि को विस्तार से समझाया है। संस्कृति का उजास गायकी एवं ''केसरिया बालम'' लोक संगीत, छायां. कन, चित्रकला और चित्रकारों की विशिष्टता पर भी लेख लिखा है। डॉ. श्याम सुन्दर दुबे, (2007) ने ''लोक

चित्रकला परम्परा और रचना दृष्टि'' पुस्तक में जहाँ आधार: परम्परा और दिक् काल के अंतर्गत लोक–परम्परा और लोक संस्कार एवं लोक: दिक् काल का अवबोध किया है। वहीं विस्तार: रचना दृष्टि के अंतर्गत लोक–चित्र परम्परा: मिथकीय आधार, आदिम चित्रकला: अभिप्रायों का संसार, गोदना: लोक–चित्रण के इतिहास चिह्न, मध्यकालीन चित्रकला में लोक–चित्र रचना की उपस्थिति, लोक–चित्रकला: कथा एवं चित्र का अंतरावलंबन, लोक–चित्र एवं काव्य का अंतरंग, लोक चित्रकार: विचलन की भूमिका का वर्णन किया गया है। पुस्तक में संप्रसार: क्षेत्रीय कला–चेतना में मालवी लोक–चित्रकला के विभिन्न परिदृश्य, बुंदेलखंड अंचल की लोक–चित्र–परम्परा, छत्तीसगढ़ की लोक–चित्रकला, मधुबनी लोक–चित्रकला: जीवन संवेदना के रंगों का विश्लेषण एवं इनसे संबंधित रेखा चित्रों के अंकन पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। देवी प्रसाद, (1999) ने ''शिक्षा का वाहन: कला'' पुस्तक में विभिन्न अवस्थाओं में सृजनात्मक प्रवृत्तियों के बदलते स्वरूप की चर्चा करते हुए शिक्षक, उसके द्वारा निर्मित शैक्षिक वातावरण एवं शिक्षा–पद्धति को बहुत ही स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है। कुछ प्रश्नोत्तरी द्वारा भी कला शिक्षा पर आधारित बातों पर चर्चा की है। डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, (2007) ने ''आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ'' पुस्तक में बताया है कि भारत में आधुनिक काल के उद्भव एवं विकास और विभिन्न कलात्मक उपलब्धियों के मूल में यहाँ के आरंभिक आधुनिक चित्रकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आधुनिक भारतीय चित्रकला आंदोलन के प्रमुख चित्रकारों के जीवन क्रम, उनकी रचना प्रक्रिया, भूमिका एवं उपलब्धियों को ऐतिहासिक संदर्भ में विश्लेषित करने का प्रयास भी किया गया है।

शोध के उद्देश्य

– शोध पत्र के माध्यम से चित्रकला में विनय शर्मा के योगदान का विश्लेषण।

– शोध पत्र के माध्यम से विनय शर्मा द्वारा चित्रकला में किए गए नवीन प्रयोगों का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध में विनय शर्मा की कृति के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है। शोध तकनीक के रूप में प्राथमिक स्रोत के लिए स्वयं विनय शर्मा का व्यक्तिगत साक्षात्कार के अंतर्गत दस प्रश्नों की संचरित प्रश्नावली की तकनीक का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत उनकी कला यात्रा के सभी पहलुओं का इस शोध पत्र में विश्लेषण किया गया है एवं द्वितीयक स्रोत के लिए उनकी कला में नवीन प्रयोगों में प्रयुक्त विधाओं एवं तत्वों को विभिन्न पुस्तकों, शोध प्रबंध और इंटरनेट द्वारा एकत्रित सामग्री के आधार पर गहन विश्लेषण किया गया है। इसमें उन सभी विधाओं का विस्तृत विश्लेषण किया गया है, जो विनय शर्मा की कला की मौलिकता से परिचय कराती है।

बचपन में विनय शर्मा की प्रेरणा स्रोत उनकी माताजी स्व. शिव प्यारी शर्मा थी। वे स्वयं भी एक कलाकार थी। उनकी माताजी न केवल घर में बनने वाली जन्मपत्रियों में रंग भरा करती थी, बल्कि उत्सवों एवं त्योहारों पर घर को मांडनों से अलंकृत भी किया करती थी। पंखियाँ बनाना, कढ़ाई करना भी उनके कला कर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। विनय ने अपने बाल्यकाल से अपनी माताजी को कला कर्म करते देखा, जो बाद में उनकी कला की ओर आकर्षित होने का मुख्य कारण बना।

युवावस्था में विनय शर्मा के प्रेरणा स्रोत विख्यात चित्रकार डॉ. विद्यासागर उपाध्याय और स्व. मोहन शर्मा रहे। विनय को मुम्बई के प्रसिद्ध चित्रकार हरिकिशन लाल के काम करने के तरीके ने बहुत प्रभावित किया। ग्रे कला दीर्घा के निदेशक थॉमस सॉकोलोस्की की जयपुर यात्रा के दौरान विनय के काम की सराहना करना और एफ. एन. सूजा के साथ छात्र–जीवन का समय भी उनके लिए बहुत उपयोगी और प्रेरणादायक रहा। उनकी चित्रकारी में कई भाव नजर आते हैं। जैसे– एक पत्थर में उन्हें कोमलता नजर आती है, तो एक रूई में कठोरता दिखाई देती है। यह एक संयोगमात्र ही है, जिसके परिणामस्वरूप विनय शर्मा वैचारिक प्रवृत्ति वाले चित्रकार बन गए।

विनय शर्मा के अनुसार उनकी परिकल्पना का आधार वर्तमान परिवेश रहा है। जो उनके दिमाग को कभी विचलित करता है, तो कभी उनके विचारों को बाहर लाने का प्रयास करता है। वैसे भी समस्याओं से बाहर निकलने का रचनात्मक कार्य एक कलाकार ही कर सकता है। कई बार परिस्थितियाँ कलाकार को अंदर से इतना झकझोर

देती है कि कलाकार कला बनाकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। विनय शर्मा की कलाकृतियों में इस तरह के भाव देखे जा सकते हैं।

विनय शर्मा की कलाकृतियाँ आम जनता के लिए हैं। जहाँ कला में आमजन के जीवन की झलक होती है, वहीं आमजन में प्रचलित रंगों की छ्टा बिखरी नजर आती है। यही कारण है कि विनय एक व्यक्ति विशेष, वर्ग विशेष, समुदाय विशेष को नहीं, बल्कि आमजन से जुड़ी भावनाओं को ध्यान में रखकर अपनी कलाकृतियों का सृजन करते हैं, जिससे आम कलाप्रेमी उन कलाकृतियों से अपना जुड़ाव महसूस कर उसमें अपने जीवन के दर्शन कर सके।

प्रस्तुत शोध इस तथ्य को उजागर करता है कि कला का भविष्य एक कलाकार नहीं, बल्कि देश–दुनिया में बसे कलाप्रेमी करते हैं। जिस तरह फिल्म या रंगमंच के दर्शकों या संगीत के श्रोताओं को संबंधित कला की पहचान होती है, उसी तरह कलाप्रेमियों को चित्रकारी की बारिकियाँ और उससे जुड़े हर पहलू की अच्छी समझ भी होती है। एक कलाकार ने कला को किस मनोभाव से बनाया, उसके प्रति कलाकार का समर्पण भाव कैसा रहा, कितनी ईमानदारी एवं सच्चाई के साथ कला का सृजन किया गया है, यह एक कलाप्रेमी ही निशचित करता है। जब उपरो. क्त सभी पैमानों को आधार बनाकर कलाप्रेमी एक कलाकार की कलाकृति का अवलोकन कर प्रशंसा करता है, तब सही अर्थ में कलाकार को समाज, देश और दुनिया में उपयुक्त स्थान मिलता है।

इस शोध पत्र में विनय शर्मा से गहन साक्षात्कार में कई बिंदू सामने आए। ईमानदारी से कला का सृजन करना और नई सोच से कलाप्रेमियों को आनंदित करना उनकी भावी योजना का मुख्य भाग है। नवाचारों के क्रम में मौलिकता का पुट, शुद्ध भारतीयता के संकेत एवं कलाप्रेमियों के समीप जाने का भाव होना अनिवार्य है। आज भी रेखांकन उनकी दिनचर्या का अहम हिस्सा है। वे समाज में हो रही गतिविधियों को अपने ही तरीके से कलावृतियों के माध्यम में अभिव्यक्त करते हैं। आज भी वो किसी न किसी वरिष्ठ एवं युवा कलाकार से मिलते हैं और उनके कार्य एवं व्यवहार से कुछ न कुछ सीखने का प्रयास करते हैं।

विनय शर्मा ने अपने प्रारंभिक दिनों में ''छापाकार'' के रूप में अपना कला कार्य प्रारंभ किया। कलाकृतियों में विनय शर्मा टेक्स्चर के महत्व को समझते हुए विभिन्न माध्यमों से नवीनतम तंतु धरातलों का संसार तैयार कर सम्पूर्ण कृति की बुनावट करते हैं, जिसमें कलाकार का वैयक्तिक नजरिया झलकता है। कपड़ा, कैनवास, निवार, टेक्सर वाइट, नेट, टाट, कागज, फेविकोल, रस्सी आदि माध्यमों से संयोजन की आवश्यकता अनुसार कैलीग्राफ अथवा वुड्कट के समान फलक तैयार किया है। विनय शर्मा की प्रथम चित्र शृंखला में देवी, देवताओं को कलाकार की नजर से रूपायित किया गया है। इनके विषय गणेश, सती, शिव–शक्ति, शिव शंकर आदि थे। इन चित्रों को मूर्त–अमूर्त रूप से रूपांतरित कर चटक रंगों और धरातल पर टेक्स्चर के महत्व को समझते हुए अपने चित्र संसार एवं अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम को और अधिक प्रभावशाली बनाया है। ''रेखा'' कला तत्वों में सबसे प्राचीन तत्व है, जो रूप की विशेषता को सरलता से समझाती है। कला सृजन में रेखा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है। सामान्यत: किसी चित्र–तल पर कोई चिह्न अंकित करना ''अंकन'' कहलाता है और एक वर्गीय रेखा द्वारा किए गए अंकन को ''रेखांकन'' कहते है। विनय शर्मा अपने छात्र जीवन से ही रेखांकन कर रहे हैं। उनके रेखांकन के विषय तांगे वाले, उनकी सवारी, रिक्शे वाले, चौहटी वाले, ठेले वाले, रेजगारी वाले, फटे पुराने नोट वाले, दुकानदार, महिलाएं, बच्चे, बूढ़े, मजदूर, फूलों एवं पान वाले की थड़ियां आदि रहे। शुरूआती दौर में विनय शर्मा जयगढ़ का किला, नाहरगढ़ का किला, गलता जी, सिसोदिया रानी का बाग, रामनिवास बाग आदि पर्यटन स्थल जाकर पर्यटकों और वहाँ से दिखने वाले जयपुर शहर का रेखांकन करते थे। विनय शर्मा वर्तमान में सीधे ब्रश एवं इंक से रेखांकन करते हैं, जो मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार के होते हैं। इनके वर्तमान रेख. ांकन में छाया प्रकाश से आकृतियों, रूपाकारों का धरातल पर मिलन बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से होता है। पेपर पर इनके ब्रश द्वारा इंक से किए गए कार्य में अमूर्त आकृतियाँ, संगीतज्ञ, कुछ रेखाएँ उलझी और कुछ सपाट रेखाएँ स्पेस की एकाग्रता तोड़ती हुई दिखाती है। इनका ब्रश से पेपर पर इंक लगाने का तरीका इस तरह से होता है कि जहाँ–जहाँ स्पेस पर ब्रश स्टोक लगाती है, वहाँ पर ऐसी बुनावट टेक्सचर बनता है कि आकृति निर्माण का उद्देश्य

पूर्ण दिखाई देता है। विनय शर्मा ने अपने छात्र जीवन में छापा कला पर विशेष अध्ययन किया और छापा कला में विशेष दक्षता भी हासिल की, लेकिन भारतीय समकालीन कला के अधिकतर छापाकारों ने उसी उत्कृष्टता के साथ चित्र भी निर्मित किए हैं, जिस दक्षता के साथ उन्होंने छापांकन किया। जहाँ माध्यम बदलता है, जहाँ तकनीकी पक्ष को बदलना होता है, वहाँ कलाकार के सामने अनेक समस्याएँ होती हैं। उसमें विशेष छटपटाहट होती है अपनी रचनात्मकता को अभिव्यक्ति देने की और अपनी अलग पहचान शैली बनाने की।

विनय शर्मा भी इस दौर से गुजरे हैं। उनकी यह दुविधा एक नई शैली में परिवर्तित हुई, जिसने उनको कला जगत में अलग पहचान बनाने का अवसर प्रदान किया, उन्हें समकालीन कलाकारों के समकक्ष खड़ा किया। विनय शर्मा ने भारतीय कला और समकालीन कला में नए आयाम स्थापित किए, जिसे विशुद्ध भारतीय कला का नाम दिया जा सकता है। इसमें किसी की शैली, न किसी भारतीय, न ही किसी विदेशी कलाकार की शैली का प्रभाव है।

यह शोध इस बात की पुष्टि करता है कि किस तरह विनय शर्मा ने एक पुराने संदूक से प्रेरित होकर चित्र शृंखलाओं का निर्माण किया। इन चित्र शृंखलाओं में ''स्केनिक टाइम्स बाइगोन बोनफायर'', ''होमएज टू एल्डर्स'' और ''खंडर'' आदि प्रमुख हैं। ''खंडर'' शृंखला के तहत राजस्थान के खंडर होते हुए महल, किले, हवेलियां और उनकी बिगड़ी स्थिति को अपनी कला का विषय बनाया। विनय शर्मा ने अपने चित्रों में राजस्थान की खुशबू, वहाँ का वातावरण, संस्कृति, सभ्यता और वहाँ के चटक रंगों को स्थान दिया।

प्रस्तुत पत्र में विनय शर्मा के केलिग्राफी में किए गए नवीन प्रयोगों के अंतर्गत ऑयल कलर, स्याही, क्रेयान्स, ऐक्रेलिक रंगों का प्रयोग कर इतिहास के दस्तावेजों की मूल केलिग्राफी को ऑफ टेक्सचर बनाया गया है के बारे में जानकारी दी गई है। इनके चित्रों में पृथ्वी का निर्माण, जीवन का आगमन, प्रकृति, उल्लास, विध्वंस आदि विषयों की झलक भी देखने को मिलती है।

भारतीय समकालीन कला के प्रतिपादक विनय शर्मा अपना हस्तक्षेप चित्रकला, छापा कला के साथ–साथ संस्थापन में भी रखते हैं। अपने अतीत की स्मृतियाँ और पुरानी वस्तुएँ, जिनमें पुराने यंत्र, फोन, रेड्यिो, टेली. विजन, ग्रामोफोन, फानुस, बहियाँ, कुंडलियाँ, जन्म पत्रिकाएँ, टेवे, वाद्ययंत्र, कलम, दवात, साइकिल, कुर्सियाँ, शीशे, अलमारी, दरवाजे, बर्तन, गंजीफे, पेपर और पुरानी दैनिक उपयोगी वस्तुएँ जो समय के साथ अपनी प्रासंगिकता खो देती हैं या प्रभावहीन हो जाती हैं। वे ही उनकी कलाकृति की अभिव्यक्ति का अहम माध्यम बनती है। विनय शर्मा के ''संस्थापन'' का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी अनुपम अवस्था की ओर प्रवृत्त करना है, जो कलाकार और फिर दर्शक को अपने अतीत की यादों, जीवन स्मृतियों के साथ निर्वैयक्तिक आनंद की अवस्था में ले जाती है। अतीत के होने का अहसास करवाती है और उन सभी के प्रति आभार भी व्यक्त करती है, जिनके कारण वर्तमान है।

प्रस्तुत शोध पत्र में विनय शर्मा की कृतियों का कला तत्वों के आधार पर भी विश्लेषण किया गया है। उनकी कृतियों में उपयुक्त रेखांकन रंगों द्वारा विभिन्न तानों एवं पोत का निर्माण करते हुए अंतराल का सुनियोजित प्रयोग देखने को मिलता है।

चित्रकार विनय शर्मा ने विभिन्न ''रेखाओं'' द्वारा अपनी कलाकृतियों को सृजित किया है। उनकी अधिकतर कलाकृतियों में सीधी–खड़ी अथवा लंबवत् रेखा का प्रयोग देखा जा सकता है, जिनमें विभिन्न रेखाओं के अंकन से विश्रांति, स्थिरता, मौन, संतुलन और निष्क्रियता जैसे अनेकानेक भाव देखे जा सकते हैं। उनकी कृतियों में विभिन्न ''रूपाकारों'' का अंकन मिलता है। उन्होनें अपनी कृतियों में सरल रेखाओं के द्वारा विभिन्न रूपाकारों का सृजन किया है। कृतियों में प्रयुक्त ''रंग–संगति'' अपने आप में विशिष्ट है। वे अपनी सोच, कल्पना से रंगों के चयन को समग्र रूप देकर एक रचनात्मक आकार मूर्तरूप प्रदान करते हैं। उनकी कृतियों में ठेठ राजस्थ. ानी चटक रंगों का प्रयोग देखने को मिलता है, जो परिवेश एवं वातावरण की देन है। वे अपनी कृतियों में लाल, पीला, नीला, हरा एवं नारंगी रंगों का अधिक प्रयोग करते हैं। उनके चित्रों में उल्लासित रंग देखने को मिलते हैं, जिससे उनकी आशावादिता का पता चलता है। उनकी कृतियों में रंगों द्वारा प्रेम, प्यार, उत्तेजना, साहस,

वीरता, बुद्धिमता, दिव्यता, संकल्प, उम्मीद, विशालता, आत्मीयता एवं सद्‌भाव आदि की भावभिव्यक्ति देखने को मिलती है। विनय शर्मा ने अपनी कृतियों में ''तान'' का अनेक बार प्रयोग किया है। उनके रंगीन एवं श्वेत, श्याम चित्रों में भी तान का प्रयोग किया गया है। वे अपने चित्रों में कैलिग्राफी को ''पोत'' की तरह प्रयोग करते हैं। इसके अलावा अपने लिए पेपर भी स्वयं ही तैयार करते हैं। यह नवीन सोच उनकी कृतियों को मौलिकता प्रदान करती है। विनय शर्मा अपनी कृतियों में रूपाकारों वर्ग आदि के साथ-साथ ''अंतराल'' का विशेष ध्यान रखते हैं। वे रूपाकारों एवं वर्ण के प्रयोग से अंतराल विभाजन का कुशलतापूर्वक चित्र संयोजन करते हैं। कला तत्वों के साथ विनय शर्मा ने अपनी कृतियों में ''संयोजन'' के सिद्धांत को भी महत्वपूर्ण पक्ष मानते हुए अपनी कृतियों में सृजनात्मकता के नवीन आयाम स्थापित किए हैं। उनकी कृतियों में संयोजन के प्रमुख सिद्धांत ''अनुपात'' को बहुत ही सुनियोजित ढंग से व्यवस्थित किया है। वे अपनी कृतियों को किसी विषय या वस्तु के नाम से नहीं बांध ाते। उनकी कृतियों में अतीत, यादें, स्मृति, संवेदना आदि होती हैं। विनय शर्मा की अधिकतर कृतियों में कला तत्वों की ''एकता'' देखी जा सकती है। इसके अलावा कृतियों में रचना तत्वों, विषय आदि की पारस्परिक संबद्ध ता का अद्‌भुत ''सामंजस्य'' है। उनकी कृतियों में स्वरूप, प्रस्तुति आदि की दृष्टि से परस्पर निकट्ता रखने वाले तत्वों का सुरूचिपूर्ण तरीके से समायोजन देखा जा सकता है। विनय शर्मा की कृतियों में ''संतुलन'' का शास्त्रीय स्वरूप देखने को मिलता है। उनकी कृतियों में दृष्टि की गतिशीलता स्थित कलाकृति में ''गति'' का आरोपण करती है। स्थित स्वरूप वाले रचना तत्वों में गति उत्पन्न कर देना मुख्यत: रचनाकार की कुशलता पर निर्भर करता है, जो उनके सिल्क-छापों में देखी जा सकती है। विनय शर्मा ने अपनी कृति में विरोधाभास उत्पन्न कर रंगों की ''प्रभाविता'' दिखाई है साथ ही रंगों की पुनरावृत्ति, विभिन्न तानों की प्रस्तुति एवं विभिन्न प्रकार के रंग-पोत को निर्मित कर प्रभाविता उत्पन्न की है।

कृतियों में कला तत्वों की ''एकता'' देखी जा सकती है। इसके अलावा कृतियों में रचना तत्वों, विषय आदि की पारस्परिक संबद्धता का अद्‌भुत ''सामंजस्य'' है। उनकी कृतियों में स्वरूप, प्रस्तुति आदि की दृष्टि से परस्पर निकट्ता रखने वाले तत्वों का सुरूचिपूर्ण तरीके से समायोजन देखा जा सकता है। विनय शर्मा की कृतियों में ''संतुलन'' का शास्त्रीय स्वरूप देखने को मिलता है। उनकी कृतियों में दृष्टि की गतिशीलता स्थित कलाकृति में ''गति'' का आरोपण करती है। स्थित स्वरूप वाले रचना तत्वों में गति उत्पन्न कर देना मुख्यत: रचनाकार की कुशलता पर निर्भर करता है, जो उनके सिल्क-छापों में देखी जा सकती है। विनय शर्मा ने अपनी कृति में विरोध ाभास उत्पन्न कर रंगों की ''प्रभाविता'' दिखाई है साथ ही रंगों की पुनरावृत्ति, विभिन्न तानों की प्रस्तुति एवं विभिन्न प्रकार के रंग-पोत को निर्मित कर प्रभाविता उत्पन्न की है।

शोध पत्र में यह भी विस्तार से समझाया गया है कि विनय शर्मा की रचना प्रक्रिया का स्रोत अतीत की स्मृतियाँ हैं, जिन्हें वे अपनी कल्पना, गहन, मनन, चिंतन और विभिन्न माध्यमों से गुजरता हुआ अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट करते हैं। इसके साथ ही वे अपनी कलाकृतियों में नवाचार एवं मौलिकता से नए विचार प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं। वे कलाकृतियों में रंग-रूप का चुनाव विषय-वस्तु, वातावरण, परिस्थितियाँ, आस-पास के परिवेश से मस्तिष्क में चल रही उथल-पुथल आदि के आधार पर करते हैं। रंगों के चुनाव का आधार राजस्थानी परिवेश है। जहाँ भी वे चट्क रंग देखते हैं, उसे ही अपनी कला में उतार देते हैं।

इस शोध पत्र में विनय शर्मा की खोज ''पेपरमैन'' विधा चित्रकला को नवीन आयाम देती है। चित्रकारी का प्रदर्शन और नवीन विधा ''पेपरमैन'' के रूप में विनय शर्मा की उच्च परिकल्पनाशीलता की परिचायक हैं। वर्तम. ान युग तकनीकी और विचारों को प्राथमिकता देने वाला युग है। विचारों से परिपूर्ण अभिव्यक्ति आज की कला की प्रमुख मांग है। इन परिस्थितियों से विनय शर्मा भी अछूते नहीं रहे। उन्होंने भी अपने विचारों को तकनीकी एवं व्यावहारिक रूप से संबद्ध करते हुए कृतियों का निर्माण किया। ''पेपरमैन'' जैसी अनूठी परिकल्पना आधुनिक परिपेक्ष्य में उनकी चित्रकारी का श्रेष्ठ उदाहरण है। एक समय था, जब सभी काम कागज एवं कलम से हुआ करते थे। प्रस्तुत शोध इस बात की भी पुष्टि करता है कि आज के इस कम्प्यूटर के युग में कागज-कलम से आमजन की दूरियाँ बढ़ती जा रही है। ऐसे में विनय शर्मा ने निश्चय किया कि एक बार फिर से कागज एवं कलम के प्रति

आमजन का जुड़ाव पैदा किया जाए। जिस भारतीय लेखनी और रेखाओं का अपना सौंदर्य एवं महत्ता है। उसके प्रति आमजन को जागरूक करने के लिए ''पेपरमैन'' की परिकल्पना की। इस विचार को मूर्त रूप देने के लिए विनय शर्मा ने अतीत से जुड़ी कुछ पुरानी वस्तुओं को आधार बनाया, जिनमें पुरानी खाता बहियाँ, पोस्ट कार्ड, जन्मपत्रियाँ, स्टाम्प पेपर आदि शामिल हैं।

सदियों पुरानी पांडूलिपियों से युक्त एक परिधान बनाया, जिसमें कोट, पेन्ट, शर्ट, टाई, मफलर, टोपी, दस्ताने और जूते प्रमुख हैं। इस परिधान को पहनकर विनय शर्मा लोगों के बीच में जाते हैं, उन्हें भारतीय संस्कृति–स. भ्यता के बारे में जागरूक करते हैं, साथ ही यह संदेश भी देते हैं कि इस कम्प्यूटराइज्ड युग में जिस तरह कलम से दूरी बनती जा रही है, उसे फिर से अपने हाथों में थामना है।

विनय शर्मा का एक ''स्टूडियो'' भी है, जिसमें बीते हुए कल को जीवंत करता अतीत ठौर–ठौर जैसे बिखरा पड़ा है। पुराने जमाने की रोजमर्रा से जुड़ी भांति–भांति की चीजें उनकी कला का हिस्सा है, जिसमें पुराने जमाने का ग्रामोफोन, टाइपराइटर, बड़ी–सी दवात, झूले, झाड़–फानुस, इरानी आइना, सूत कातते चरखे और गुजरे जमाने की याद दिलाते ढेर सारे रेडियो, टेलीफोन, टेलीफोन बूथ, माइक, बीते समय की फिल्मों के पोस्टर आदि का अद्भूत संग्रह देखने को मिलता है।

प्रस्तुत शोध पत्र विनय शर्मा की चित्रकला के विविधि आयामों का गहन विश्लेषण करता है। शोध पत्र में विनय शर्मा की कला यात्रा को दर्शाया गया है। उनके द्वारा किए गए कला से संबंधित सभी कार्यों का विस्तृत वर्णन किया गया है। चित्रकला की विभिन्न विधाओं एवं उनसे संबंधित तत्वों का विस्तार से उल्लेख भी गया किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र विनय शर्मा की कला यात्रा के साथ–साथ इस कला से जुड़े विशिष्ट पहलुओं का वर्णन करता है। इस शोध पत्र में समकालीन चित्रकार विनय शर्मा की शैली को कला के विभिन्न आयामों के माध्यम से समझाने का छोटा–सा प्रयास किया गया है।

विनय शर्मा समकालीन चित्रकार है, जिन्होंने चित्रकला को नई परिभाषा दी एवं चित्रकला के क्षेत्र को अंतराष्ट्रीय स्तर तक ले जाने का सफल प्रयास भी किया है। विनय शर्मा की गिनती उन सभी देश के जाने–माने कलाविदों में की जाती है, जिन्होंने अपनी कला को अपने ही तरीके से जन–जन तक पहुंचाया। प्रस्तुत पत्र में उनकी विधाओं, तत्वों और ''पेपरमैन'' जैसे नवीन प्रयोग का विशेष अध्ययन किया गया है। विनय शर्मा के ''स्टूडियो'' पर भी चर्चा की गई है, जिसमें उनका पुरानी वस्तुओं से प्रेरित होकर कला सृजन करना प्रशंसनीय कार्य है।

प्रस्तुत शोध पत्र भविष्य में इस कला शैली पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए न केवल उपयोगी होगा, बल्कि उन्हें इस कला शैली को गहराई से समझने में सहायता भी मिलेगी।

संदर्भ सूची

उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव. लोक संस्कृति की रूपरेखा. इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन, 1998

कादरी, एस.एस. असगर अली. प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं कलायें. बरेली: लिटरेरी पब्लिकेशन ब्यूरो, 1972

कुमार, डॉ. सुनील. भारतीय छापा चित्र कला. दिल्ली: भारतीय कला प्रकाशन, 2000

कासलीवाल, मीनाक्षी. ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2003

गुप्त, डॉ. हृदय. दृश्य कला के मूलभूत सिद्धान्त तकनीक और परम्परा. भोपाल: मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अक. ादमी, 2013

जौहरी, डॉ. ऋतु. भारतीय कला समीक्षा. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2013

दुबे, डॉ. श्याम सुन्दर. लोक चित्रकला परम्परा और रचना दृष्टि. जयपुर: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2007

पाण्डे, पूर्णिमा. कला के मूल तत्व और सिद्धान्त. अलीगढ़: इंदू प्रकाशन, 1984

रंजन, राय निहार. भारतीय कला के आयाम. नई दिल्ली: पूर्वोदय प्रकाशन, 1984

व्यास, डॉ. राजेश कुमार. रंग नाद. बीकानेर: वाग्देवी प्रकाशन, 2013

सालवी, डॉ. सुरेश. राजस्थानी लोक संस्कृति एवं लोक देवी–देवता. नई दिल्ली: हिमाँशु पब्लिकेशन्स, 2009